

मनसा सेवा - 98

अव्यक्त बापदादा :- (15. 12. 2007)

»» _ »» बापदादा ने देखा सभी का बापदादा और सेवा से अच्छा प्यार है। सेवा का वातावरण चारों ओर कोई न कोई प्लैन चल रहा है। साथ-साथ अभी समय के प्रमाण विश्व की आत्मायें जो दुःखी, अशान्त हो रही हैं उन आत्माओं को दुःख, अशान्ति से छुड़ाने के लिए अपनी शक्तियों द्वारा सकाश दो। जैसे प्रकृति का सूर्य सकाश से अंधकार को दूर कर रोशनी में लाता। अपनी किरणों के बल से कई चीजों को परिवर्तन करता। ऐसे ही मास्टर ज्ञान सूर्य अपने प्राप्त हुए सुख शान्ति की किरणों से, सकाश से दुःख, अशान्ति से मुक्त करो। मन्सा सेवा से, शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन करो। तो अभी मन्सा सेवा करो।

»» _ »» जैसे वाचा सेवा का विस्तार किया है, वैसे मन्सा सकाश द्वारा आत्माओं में हैपी और होप, यह फैलाओ। हिम्मत दिलाओ, उमंग-उत्साह दिलाओ। बाप का वर्सा, इन बातों से मुक्ति तो दिलाओ। अभी आवश्यकता सकाश देने की ज्यादा है। इस सेवा में मन को बिजी रखो तो मायाजीत विजयी आत्मा स्वतः ही बन जायेंगे। बाकी छोटीछोटी बातें तो साइडसीन हैं, साइडसीन में कुछ अच्छा भी आता है, कुछ बुरी चीजें भी आती हैं। तो साइडसीन को क्रास कर मंजिल पर पहुंचना होता है। साइडसीन देखने के लिए साक्षीदृष्टा की सीट पर सेट रहो, बस

»» मन्सा सकाश

»» _ »» आत्माओं को सुख, शांति, आशा, हिम्मत, उमंग-उत्साह देना है

→ आत्माएं अशांत हैं, बहुत ज्यादा दुखी हैं, आशारहित हैं, क्योंकि किसी ना किसी व्यक्ति की वजह से, सम्बन्ध की वजह से फंसी हुई हैं..

■ कई आत्माओं को दुःख का कारण स्पष्ट है, कई आत्माओं को स्पष्ट नहीं है, पर दुःख है.. भगवान को दोष देते हैं..

»» _ »» हम मास्टर ज्ञान सूर्य हैं, हमारा कर्तव्य है संसार में जो अंधकार है उसे दूर करना- दुःख का, अशांति का, आशाहीनता का, हिम्मतहीनता का और निराशा का.. कोई उमंग-उत्साह नहीं है.. होप पैदा करना ये हमारा काम है..

»» _ »» चेतना की तीन अवस्थाएं-

→ सतो- सबकुछ अच्छा

→ रजो- जिसमें आवेश है

→ तमो- जिसमें आलस्य, प्रमाद, निद्रा, कुछ भी करने की इच्छा नहीं

»» _ »» अभी सकाश देने की सेवा में मन को बिजी रखो तो मायाजीत विजयी आत्मा स्वतः ही बन जायेंगे

»» _ »» छोटीछोटी बातें तो साइडसीन हैं

→ जब ट्रेन में या कार में जाते हैं तो बहुत सारी चीजें दिख रही हैं तो क्या-क्या विकल्प हो सकते हैं-

■ एक तो एन्जॉय कर रहा है

■ एक तो डिस्टर्ब स्टेट में है

- एक तो नींद में हैं

- बाजू वाले से बातें करते हुए मशरूफ हो गए की बाहर

क्या हो रहा पता ही नहीं चला

- कमी-कमजोरियों को देखना, ये रोड अच्छा नहीं, वो रोड

अच्छा था

- फोटोग्राफी में लगते हैं

➤➤ साइड सीन्स देखने का नजरिया- इसके लिए महाभारत के पात्रों से समझा जा सकता है- 8 पात्र

➤➤ _ ➤➤ धृतराष्ट्र

→ जन्मांध है, पर हम ऐसे नहीं है

- उसके लिए कोई साइडसीन नहीं है क्योंकि आंखे ही बंद है

➤➤ _ ➤➤ गांधारी

→ आंखें है पर पट्टी बांध ली है

- दमन, Suppression हो रहा है

▶ मुरलियों में आया है साइडसीन नहीं देखना, थोडा

देखा, फिर बंद..

▶ इच्छा है देखने की परन्तु पट्टी बांधकर रखी है

किसी बंधन, कर्तव्य या प्रभाव के कारण..

➤➤ _ ➤➤ दुर्योधन

→ कामनाएं बहुत हैं, एन्जॉय करना चाहता है

→ संसार के जितने साइडसीन्स हैं सब जानना चाहता है, सब

पाना चाहता है, सुई की नोक जितनी भूमि भी पांडवों को नहीं देनी है..

- बाह्यमुखी व्यक्तित्व

▶ जब दुःख के साइडसीन्स तो दुखी, सुख के

साइडसीन्स तो खुश हो जाता है

▶ उसका रिमोट बटन साइड सीन के पास है

▶ जैसे साइड सीन्स वैसे उसकी अवस्था

➤➤ _ ➤➤ शकुनी

→ साइड सीन्स के साथ अपना फायदा, छेड़छाड़, छलकपट

- कैसे राज्य, धन, संपत्ति मिल जाये

➤➤ _ ➤➤ कर्ण

→ अपने ही अज्ञात दुःख में डूबा हुआ है, खास इंटरेस्ट नहीं है

इस संसार में

→ साइड सीन्स में बहुत अधिक रस नहीं है, अपना कर्तव्य निभा

रहा है

■ जो भी कर रहा है, अपनी मैत्री निभा रहा है, पर बहुत अधिक रस नहीं है साइड सीन्स में

▶ बेचारा फंसा हुआ है

»» _ »» गोपियाँ, यशोदा, सुदामा (भक्त)

→ गोपियों को संसार से क्या लेना-देना, वो कृष्ण के प्रेम में खोई है, कृष्ण के ध्यान में, कृष्ण की मूर्त उसके सामने है

→ सुदामा, जितने भक्त सभी कृष्ण के प्रेम में खोये हैं

■ उनके अंतर्जगत में ही आलोक है, प्रकाश है, बाहर के जगत से उन्हें क्या

■ चेतना के जगत में जो प्रकाश है वो बाहर के प्रकाश से कई गुना अधिक है

▶ आन्तरिक सौन्दर्य वो बाहर के सौंदर्य से कई गुना अधिक है

▶ जहाँ आत्मा आंतरिक सौन्दर्य को, आंतरिक दिव्यता

को, inner beauty को प्राप्त कर लेती है, वहां से संसार का सौंदर्य, संसार का आलोक फीका पड़ जाता है

»» _ »» व्यास

→ वो सबकुछ जानता है,

→ व्यास इस संसार को वैसे देखता है जैसा ये संसार है- नित्य

क्या, अनित्य क्या, सार क्या, असार क्या

■ इस संसार से सम्पूर्ण अनासक्त है

»» _ »» श्रीकृष्ण

→ वो सम्पूर्ण साक्षी है

■ वो गोपियों की तरह, व्यास की तरह नहीं है, वो कहीं खोया भी नहीं है

■ वो किसी में involved नहीं है

■ जैसा संसार है वैसा ही देख रहा है

■ गोपियों के साथ रास कर रहा है, जब जाने की बारी आई वापस मुड़कर नहीं देखा

■ अपने गुरु सान्दिपनी मुनि के आश्रम को छोड़ दिया फिर वापस कभी नहीं देखा

■ मथुरा को छोड़ा, द्वारिका चला गया, लोगों ने क्या-क्या कहा, परन्तु एक बार जो छोड़ दिया तो छोड़ दिया, पीछे मुड़कर नहीं देखा

▶ एन्जॉय कर रहा था, सबकुछ कर रहा था.

▶ महाभारत का इतना बड़ा युद्ध हुआ परन्तु वो साक्षी है, इन्वोल्वमेंट भी उतना ही है, साक्षी भाव भी उतना ही है

▶ कर्तव्यपरायण भी है परन्तु कामचोर नहीं है

▶ कभी भी जजमेंटल नहीं है, उसे सबकुछ पता है फिर

भी वो सबसे अलग है, सबसे detach है

▶ सबकुछ देखना है, ये साक्षी की साधना है

➤➤ साक्षीभाव

➤➤ _ ➤➤ साक्षी की साधना का अभ्यास करना है

→ जीवन में कितने दृश्य आ रहे हैं, जा रहे हैं

■ एक है उससे घृणा, नफरत करना

■ एक है आँखों में ही पट्टी बांध लेना, ये दमन है

▶ दमन कभी भी लम्बा समय नहीं चल सकता

▶ दमित भावनाएं, वासनाएं, इच्छाएं बाहर निकलेगी

➤➤ _ ➤➤ जो व्यास का मार्ग है वो अच्छा है, इससे भी अधिक जो कृष्ण का मार्ग है- ये संसार जो है, जैसा है वैसा ही समझना

→ Imotional गुडिया नहीं बन जाना है

→ Involve भी नहीं होना है

→ ना तो घृणा, ना तो नफरत, ना तो अति प्रेम कुछ भी नहीं

■ सम्पूर्ण साक्षी भाव, ये बहुत ऊँची साधना है

■ अध्यात्म में सर्वोच्च अवस्था उपराम अवस्था, साक्षीभाव

को कहा जाता है

■ अध्यात्म में इसको परिणाम कहा गया है, पर बाबा ने

कहा इसकी साधना करो

▶ बाबा ने कहा साक्षी होकर देखो, ये अभ्यास करो,

साधना करो, हर चीज को साक्षी होकर देखने की

➤➤ _ ➤➤ साक्षी की साधना, साक्षी भाव की साधना रोज करनी है

→ जीवन में ऐसी-ऐसी घटनाएँ आएँगी- सुख के क्षणों में, खुशी में धोखा होता है, दुःख के क्षणों में नहीं

■ खुशी में वो बाह्यमुखी ज्यादा होता है, दुःख में हर एक व्यक्ति अंतर्मुखी हो ही जाता है

▶ किसी ने कुछ कह दिया, डांट दिया, धोखा दिया तो अपने आप उस दिन वो मौन रहता है

▶ उस दुःख का फायदा उठाना है

▶ सुख की tendency बाह्यमुखी बनाने की है

▶ दोनों ही अवस्था साक्षी नहीं है

→ साक्षी अर्थात जो चीजें आ रही है, जा रही है उन्हें देखना

■ ना सुख में उछले, ना दुःख में डोले

▶ ऐसी साक्षी अवस्था का अभ्यास करना है

► अपनी Bio-pic को मूवी के रूप में देखना, बचपन

से लेकर अब तक जो भी हुआ सबकुछ साक्षी होकर देखना, इससे साक्षी भाव और सघन और प्रगाढ़ होगा..
